आपातकाल में सृजन फुलवारी

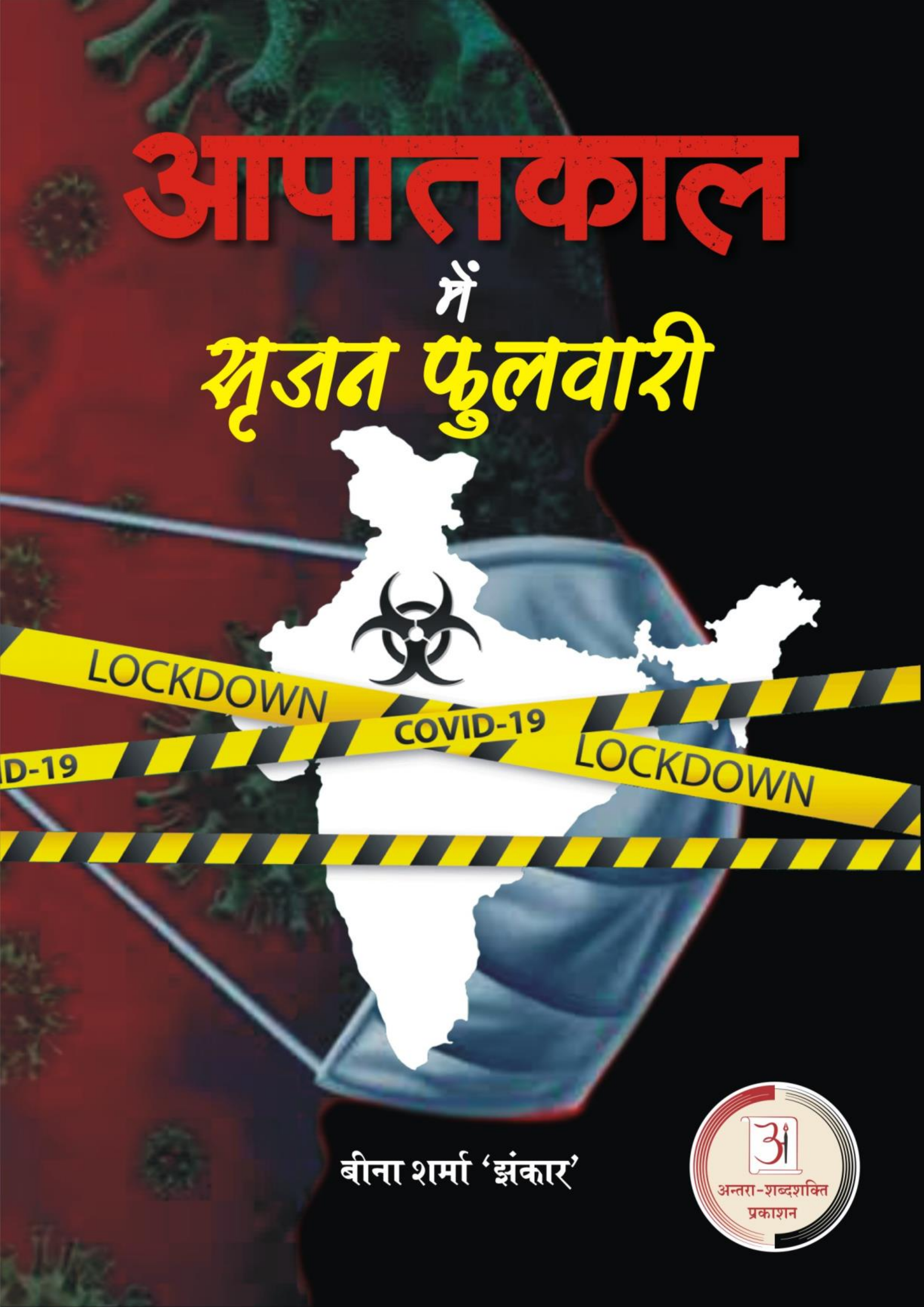

बीना शर्मा 'झंकार'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

बीना शर्मा 'झंकार'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-102-2
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2020 बीना शर्मा 'झंकार'
मूल्य- 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY BEENA SHARMA 'JHANKAR'
वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	संदेश	6
2.	कैद में अब तो मकान हो चले हैं	7
3.	सारा आकाश तुम्हारा है	8
4.	तेज्	9
5.	दिल किसी का दुखाया नहीं	10
6.	तब और अब	11
7.	बीत रहा है साल	12
8.	खुद से मिला पाओगे निगाहें	13
9.	चंद्रयान लेकर हम आये	14
10.	महामारी	15
11.	इक्कसवी सदी की नारी	16
12.	रिश्ते	17-18
13.	आओ अंधकार मिटायें	19-20
14.	घात लगाओ	21

संदेश

नजदीकियों को दूरियों में आज बदलना,
बात मान संदेश सभी को देते रहना,
किस रुप में कहाँ छुपा बैठा है कोरोना।
घर में रहकर एतियात सबको है बरतना।।

खींच दो लक्ष्मण रेखा कोई आ न पाये,
पास दूर के हुए सभी अपने हैं पराये,
मोदी जी के निर्देशों का पालन सब करना।
घर में रहकर एहतियात सबको है बरतना।।

सावधान रहकर ही शायद हम बच पायें,
घड़ी-घड़ी हाथों को अपने धोते जायें,
भाई-बंधु मात-पिता जी जरा संभलना।
घर में रहकर एतियात सबको है बरतना।।

दोस्ती यारी की बातें अब हुई पुरानी,
जान बचेगी तब लिख लेंगे नयी कहानी,
किसी से हाथ मिलाने की जुर्रत न करना।
घर में रहकर एहतियात सबको है बरतना।।

कैद में अब तो मकान हो चले हैं

रात पहाड़ दिन वीरान हो चले हैं।
कैद में अब तो मकान हो चले हैं।।

सूरज के आने की है किसको फिकर,
बेरुखी से वो हैरान हो चले हैं।।

भंड़ार घर बेवजह अटे पड़े हैं,
घर के घर दुकान हो चले हैं।।

मालूम किसे सजेंगी कभी महफिलें,
मन भी अपने अंजान हो चले हैं।।

क ख ग ए वी सीडी कितना पढ़ायें,
सिर दर्दी से परेशान हो चले हैं।।

रहते थे कभी हम जिनके दिल में,
खुद के दिल में मेहमान हो चले हैं।।

देख-देखकर चेहरा एक दूजे का,
"बीना" पति-पत्नी तूफान हो चले हैं।।

सारा आकाश तुम्हारा है

सुनो नारी.....
पुरुष के पुरुषत्व का भार
वहन करने की है क्षमता मुझमें
किस कारण
किसके आदेश पर आँकते रहे हो कम मुझे
कभी अबला/कभी कमजोर
कभी निरीह जानकर/ कहकर धमकाते/समझातेआये हो
ईश्वर की ये अनमोल रचना
उस द्वारा प्रदत्त गुण–
ममता /करुणा/ दया/ उदारता/
सहानुभूति एवं सहनशीलता के कारण
कभी क्षमा/कभी अनदेखा करती रही हूँ।
काली/ दुर्गा/ सावित्री/ गार्गी सभी तो थी नारी
भूल गये तो सुनो ..! तुम्हारी जन्मदात्री नारी ही थी
जब-जब रक्तबीज/महिषासुर
आदि पुरुषवादी सोच ने अपनी हदों को किया है पार
तब-तब काली/ दुर्गा रुप में हो अवतरित संहार किया है
यह ब्रह्मांड हमारा भी है
सक्षम हैं हम भार वहन करने में इसका
सुनो नारी..
तुमने अपनी क्षमता को किया है अनदेखा
पहचानो सारा आकाश तुम्हारा है....!

तेज

प्रचंड तेज से बढ़ो
रुको नहीं बढ़े चलो।
धरा गगन का नारा है
ये वतन हमारा है।।

फैसला एक बार होगा
आर होगा पार होगा
राष्ट्र रक्षा है सर्वोपरि
सामने हो कोई अरि
जय बोल महाकाल की
काल बन चढ़े चलो
बढ़े चलो बढ़े चलो।।

खींच दो लकीर तुम
बनना फकीर तुम
बिछा दो अंगार राहों में
रहे दुश्मन पनाहों में
देश रक्षा खातिर तुम
विकराल रुप धर चलो
बढ़े चलो बढ़े चलो।।

दिल किसी का दुखाया नहीं

आज तक दिल किसी का दुखाया नहीं।
आपका प्यार अब तक भुलाया नहीं।।

गीत संगीत मेरे समर्पित तुम्हें।
गीत हमने कभी और गाया नहीं।।

फिर बहारों का मौसम हँसी आ गया।
फूल कोई भी तुमको लुभाया नहीं।।

हंसके खिलके बुलाती रही हर कली।
देखकर वो कभी मुस्कुराया नहीं।।

घूट पीते गये दर्द के हम सदा।
दर्द कितना हमें है जताया नहीं।।

फिर अकेला हमें छोड़कर वो गये।
किस तरह हम जियेंगे बताया नहीं।।

लाख चाहा तुम्हें भूल जायेंगे हम।
दिल कभी पर तुम्हें भूल पाया नहीं।।

भूल पायेंगे कैसे तुम्हें ये कहो।
हाल अपना किसी को सुनाया नहीं।।

मान -सम्मान "बीना" तुम्हारा रहे।
क्या किया हमने ये भी जताया नहीं।।

तब और अब

तब
खंडित हुआ था अभिमान
बचा न सकीं थीं स्वाभिमान
सीता पांचाली थीं लाचार
कर न पायीं थीं प्रतिकार
बन अग्निशिखा मौन रहीं
हुआ चीर हरण मौन रहीं
शिरोधार्य किया अपमान
पति देव का घटे न मान।।

अब
उठो सबक सिखाना होगा
दुष्टों से बचाना होगा
सीता बचीं न पांचाली
स्वंय को खुद बचाना होगा
कुछ कर गुज़र जाना है
जुल्म से निजात पाना है
अग्निशिखा तुम नहीं बनोगी
अब स्वाभिमान जगाना है।।

बीत रहा है साल

कैसे मनायें उत्सव हालात वही हैं
बीत गया साल मगर जज्बात वही हैं।

दुश्मन भी सदा रहा दुआओं में शामिल
चोट खाई थी दिल पर ख्यालात वही है।।

अपने पराये में करें भेद कोई कैसे
हर चेहरे पर है मुखौटा जात वही है।।

खुद को बदलता रहा हूँ मैं अब तक
नहीं बदली जमाने की औकात वही है।।

जिस्म से जिस्मों का मिलन होता है यहाँ
रूह से मिलती नहीं रूह गात वही हैं।।

चाह कर भी बदल पाये न तकदीर अपनी
रूठें हैं सितारे "बीना" कायनात वही है।।

खुद से मिला पाओगे निगाहें

दर्द रिसता अंतस से
उठती गहरी गूंज सिहर-सिहर जातीं हवायें
दर्द सह न पाती फिज़ायें
सुप्त हो गयी, लुप्त हो गयी करुणा
यहाँ कोई नहीं है अपना

मर चुके अहसास,
हैं खोखले जज्बात
चीखों के गूजते हैं नाद
पड़े हैं कानों में शीशे
पहुँच पातीं कब आवाज
गूँगा बहरा हुआ समाज

प्रश्न चिंह लगे चौराहों पर
अपने सभी परायों पर
जान नहीं सांस नहीं
बुत बने सभी हैं आहों पर

सुनता कौन पुकार बहशीपन के इस जंगल में
गूंजेगे न अब कहकहे, सिसकेंगी आहें
तड़पायेंगी सूनी सूनी ये राहें
दर्द से पुकारती हजारों बाँहें
खुद से मिला पाओगे निगाहें....!

चंद्रयान लेकर हम आये

सितम पर सितम किये जा रहे हो,
बता दो जरा क्यों तरसा रहे हो।।

माना कि हो तुम बहुत खूबसूरत,
इसी बात पर इतना इतरा रहे हो।।

दर पे तेरे चंद्रयान लेकर हम आये,
एक तुम हो जो भाव खा रहे हो।।

भाव इतना आखिर खाते हो क्यूँ,
आतिथ्य करने से घबरा रहे हो।।

करने दीदार तेरा दर पे आये,
बेवजह हमसे शरमा रहे हो।।

कहती थी माँ मामा हो हमारे,
तुम मामा कंस नजर आ रहे हो।।

महामारी

विपदा पड़ी है भारी,
कोरोना है महामारी,
रक्षा करो वनवारी,
प्राणी हलकान है।

जाने कहाँ मिल जाये,
किससे चिपट जाये,
संक्रमित कर जाये,
नहीं पहचान है।

जग में है हाहाकार
मची है चीख पुकार
कैसा इसका आकार
लाया ये तूफान है।

संकट हरो हे नाथ,
तुम बिन कौन साथ,
समाधान करो पाथ,
सब परेशान है।।

इक्कसवी सदी की नारी

शोर सुना बड़ा भारी,
इक्कसवी सदी की नारी,
होके मजबूत अब,
आकाश छूने चली।

मन करे हाहाकार,
चोट करे वार-वार,
पूछे किससे सबाल,
मची है खलवली।

माता पिता की दुलारी
घर भर को थी प्यारी,
सोन चिड़िया हमारी
अंगारों पर चली।

भेड़ियों ने घात किया,
पीछा बार-बार किया,
खुद को बचा न पाई,
खाक में मिल चली।।

रिश्ते

कहते हैं वक्त के साथ रिश्तों में परिपक्वता आती है,
कथन-कहा- सुना सर्वथा उचित प्रतीत होता है।
शैने:-शनै: सानिध्य के साथ रिश्तों की ये परिभाषा
धरातल पर अपने अस्तित्व को प्राप्त करती है,
परिपक्वता और प्रगाढ़ता लाती है,
आनी भी चाहिए।
किंतु
रिश्तों में माधुर्य के लिये एक अनिवार्य तत्व है,
एक दूसरे के प्रति वचनबद्‌धता के साथ-साथ विश्वास और सच्चाई,
जब रिश्तों में ये तत्व समाहित होते हैं
तब रिश्ते नि:संदेह परिपक्व ही नहीं
जिंदगी में रस
और उमंग रुपी इंद्र धननुषीय रंग भर जीवन को रंगीन बना
आपको जीवन की और मोड़ देते हैं।
गर ऐसा न हो तब रिश्ते
न तो अपनी मंज़िल तय कर पाते हैं
अपितु दर्द के साथ घृणा का सैलाब ले आते हैं।
इस प्रकार के रिश्ते ऐसे घाव दे जाते हैं
जो कभी भर नहीं पाते गर भर भी जायें
तो घावों पर एक सूखी परत रूपी निशान छोड़ जाते हैं।
जाने अंजाने अपने ही हाथों
वो पपड़ी ख़ुरचकर हम उसे नासूर बना डालते हैं,
किसी भी रिश्ते की कड़ी

जीवन में जोड़ने से पूर्व
हम सचेत कहाँ रह पाते हैं
कभी हालात, कभी हम जानबूझकर
अंजाने में, बहकर भावनाओं में,
अंजाने से रिश्ते में बंध जाते हैं,
होश आने पर रिश्ते की अपरिपक्वता
और अपनी भूल का एहसास होने पर
तब तक उस रिश्ते को सुधारने की
न तो गुंजाइश होती है न इच्छा,
क्योंकि किसी भी फ़टे वसन के छेद को
रफ़ू कर देने से वो पूर्वत कहाँ दिख पाता है।
रिश्तो में अनिवार्य तत्व है
सच्चाई, विश्वास और अपनत्व।
सम्भवत: इसी माप दंड पर
रिश्ते परिपक्व होकर अपनी ख़ुशबू से
आपकी वेदना को पीकर
आपको खुशी से सराबोर कर
जीवन की ओर लौटा लाते हैं,
ज़िदादिल बना जाते हैं,
धरातल पर फ़लते फ़ूलते हैं
वरना बिख़र जाते हैं,
टूट जाते हैं और दे जाते है दर्द का सैलाब।
और दर्द रिस रिसकर लिख जातें हैं
दर्द की इबारत
जहाँ होता है दर्द, दर्द और सिर्फ़ दर्द.......!

आओ अंधकार मिटायें

घर घर दीया जलायें
आध्यात्मिक सोच
होगें दूरगामी प्रभाव सनातन संस्कृति है हमारी
जो कहा उन्होंनेअपने-अपने घर की दहलीज पर,
दरवाजों पर, बालकनी पर
रखकर दीया कराना है अहसास सभी को,...!

हम अकेले नहीं हैं
कोई भी अकेला नहीं है
यही होगी हमारी एकता की परीक्षा
उतरेंगे खरे इस परीक्षा में
कोरोना को हरायेंगे, हम जीत जायेंगे,..!

आई कैसी अंधियारी रात
काली कलुषित अमावस रात
सदभाव का, एकता का दीया जलायें
पुनः एक और दीवाली मनायें
कोरोना को हरायें

विपदायें मिट जायेंगी
महामारी कट जायेगी
रोशन घड़ी जब आयेगी
जग को रोशन कर जायेगी

वक्त आज बड़ा है भारी
वेवक्त न आये जाने की वारी
जहरीली हुईं फिज़ायें
खुद को कैसे बचायें
मन मस्तिष्क हुआ कुंठित

गर हम ऐसा कर जायेंगे
खुशबुओं से महकेंगी फिज़ायें
हर आँगन/उपवन महकेंगे
गली/मौहल्ले/ चौबारों पर
किस्से नये कई चहकेंगे

बज उठेंगे घंटे घड़ियाल
बोल उठेंगी चहु दिशायें
शंखों के निनाद से
मंत्रों के जाप से
सत्य शिवम सुंदरम् के स्वर शाश्वत गूजेंगे

अमृत कानों में जब घुल जायेगा
कली कली खिल जायेंगी
हर आँख तब मुस्कायेंगी
वो सुबह जरूर आयेगी
वो सुबह जरूर आयेगी....!

घात करो

घात करो
प्रतिघात करो
चटाकर धूल दुशासन को
यमलोक में ड़ालो

द्रोपदी,
शकुंतला हो
दुर्गा अरु काली बन
संहार कर ड़ालो

मौन है सभा सारी
सारे यहाँ धृतराष्ट हैं
भीष्म पर न करना भरोसा
भष्म इसको कर ड़ालो।।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

धरती पर मानव जीवन अनमोल है अतः मानव को हर परिस्थिति में स्वंय की सेवा व देखभाल करनी ही चाहिए। सुख और दुख ईश्वरीय प्रदत्त उपहार है हमारे लिये जो हर एक मनुष्य के जीवन आते जाते रहते हैं।

सुख यानि सम अथवा हमारे मनमाफिक परिस्थिति उसमें हम अपने समय का सदुपयोग न तो उचित रुप से कर ही पाते है न करना ही चाहिए इस वाबत सोचते है। एक बात जो मैंने अब तक के जीवन को जीते हुए समझी कि सुख के वक्त का पहीया या यूँ कहें उसकी गति बहुत तीव्र होती है जिस कारण वो कब आया कब चला गया हम जान ही नहीं पाते और अधिकतर प्राणियों से यह सुना जाता रहा, अरे हमारे ऐसे भाग्य कहाँ..? हमारे जीवन में सुख आये।

वहीं दुख यानि जीवन की विषम परिस्थितियाँ। इस वक्त समय की चाल बहुत धीमी प्रतीत होती है इस कारण सभी के मन नकारात्मकता के भावों की अधिकता और व्यवहार देखने को मिलता है।

ऐसे में हमें धैर्यपूर्वक रचनात्मक कार्यों (जिसमें जिसकी रुचि हो) के साथ ही साथ आध्यात्मिक आचार विचार को अपनाकर नित नवीन ऊर्जा का संचार करते रहना चाहिए।

आज हमारा देश ही नहीं अपितु पूरा विश्व एक आकस्मिक पीड़ा, अघोषित युद्ध, आपातकाल जैसी विषम परिस्थितियों से जूझ रहा है। पूरा विश्व एक महामारी को झेल रहा है बड़े-बड़े डाक्टर वैज्ञानिक इसके समाधान को खोजने में लगे हैं जिससे इससे निजात दिलाई जा सके। हमने समाचारों और टीवी, सोशल मीडिया के जरिये महसूस किया।

ये सभी इतने पर न तो हारे न हार मानकर शोध करना, समाधान खोजना छोड़ा। इनके साथ ही हमारे देश के राष्ट्रदूत सेवादार भगवान बन सभी की सेवा में जुटे हैं। हम उनके कार्य को सराहते हुए उनके जीवन की मंगल कामना करते हैं।

मैंने भी इस विषम और कठिन समय में कविता लेखन कर अपने मन में उमगे भावों से सकारात्मक ऊर्जा का संचार करने के साथ समय का सदुपयोग किया।

रचनाकार
बीना शर्मा 'झंकार'
Mobile - 9799904433

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-102-2
मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/